ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14 Vol-5, No.-II,PP-1-3, YEAR-Dec.2016

महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारतीय शिक्षा में योगदान

❑ डॉ0 सरोज गुप्ता
❑ श्रीमती वन्दना सिंह,

विश्व में प्रकृति के नियमानुसार सर्वदा से उत्थान के लिए प्रयत्न किये जाते रहे हैं, जिसके फलस्वरूप संसार में महान् विभूतियों ने जन्म लिया और आदिकाल से आधुनिक काल तक उनका आविर्भाव हुआ है। भारत की भूमि में समय–समय पर महापुरूषों का आविर्भाव हुआ है और उन्होंने अपने प्रयत्नों से भारत का ललाट ऊँचा किया। महात्मा बुद्ध, आचार्य शंकर, दयानन्द, महात्मा गांधी आदि अन्यान्य महापुरूषों ने अपने–अपने ढंग से मानव का पथ प्रदर्शन किया है और जीवन को विभिन्न दिशाओं में प्रगतिशील बनाया है। महर्षि दयानन्द एक क्रांतिकारी अर्थात् विश्व द्रष्टा थे। मानव जीवन का कौन सा वैयक्तिक या सामाजिक पहलू रह गया जिसके सम्बन्ध में दयानन्द ने पथ–प्रदर्शन नहीं किया। ''शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के सभी उपायों की मीमांसा उनके लेखों, व्याख्यानों और कार्यो में हम पाते हैं''। डॉ0 रवीन्द्र ठाकुर के शब्दों मे ''महान गुरू दयानन्द के मन ने जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया है।''महर्षि दयानन्द ने भारत के एक शास्त्र, एक देवता, एक भाषा और एक संस्कृति की प्रतिष्ठा की। भूमण्डल भर में ऐसी एकता और इसके फलस्वरूप सुख–शान्ति एवं समृद्धि का राज्य उनका सुनहरा सपना था। ऐसा महान व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द का था, स्वामी दयानन्द प्राचीन ऋषियों की परम्परा में महर्षि थे। अपनों समय की धार्मिक अज्ञानता एवं दुर्व्यवस्था और दुर्दशा को देखकर आनन्द का दिल विद्रोही हो उठा था और सत्य की खोज के लिए नारा था ''वेदो की ओर लौटो'' (Return to Vedas) इसे महायोगी अरविन्द ने भी कहा है कि ''स्वामी दयानन्द का यह कहना है कि वेद वैज्ञानिक और धार्मिक सत्यों का भण्डार है, जरा भी काल्पनिक नही है। मै तो यहां तक कहता हूँ कि वेदों में वे वैज्ञानिक सत्य वर्तमान हैं जिन्हे आधुनिक वैज्ञानिक समाज अभी तक नहीं जानता और दयानन्द ने वेदों के ज्ञान भण्डार की सीमा के विषय में जो कहा है वह बढाकर नही बल्कि घटा कर कहा हैं। उन्नीसवी शताब्दी के मध्य मे प्रारम्भ हुआ स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित ''आर्य समाज''की भूमिका सर्वाधिक गौरवशाली रही हैं आर्य समाज की स्थापना केवल भारत के उत्थान के उद्देश्य को लेकर ही नही की गयी वरन इसका व्यापक उद्दश्य सम्पूर्ण जगत को सभ्यता, संस्कृति और आध्यात्म की एक एक सी दिशा दिखाना था जिसमे मानव मात्र का कल्याण हो सके । इस महान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु जहां हर व्यक्ति की शारीरिक और सामाजिक उन्नति को हेतु आवश्यक

एसो0 प्रो0 (शिक्षा शास्त्र),म0 गॉ0 चि0 ग्रा0 वि0 वि0 चित्रकूट सतना (म0 प्र0)
शोध छात्रा (शिक्षा शास्त्र),म0 गॉ0 चि0 ग्रा0 वि0 वि0 चित्रकूट सतना (म0 प्र0)

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

साधन जुटाना अनिवार्य है, वही सामाजिक एवं सामूहिक उन्नति को भी दृष्टिपथ में रखना आवश्यक है। मानव मात्र को भैतिकता, अन्धविश्वास, स्वार्थ औरसंकीर्णता के भ्रम जाल से निकलकर ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' के पवित्र मार्ग पर ले जाने हेतु महर्षि दयानन्दने आर्य यमाज के माध्यम से ''कृष्णवन्तो विश्वमार्गम'' की गम्भीर उद्घोषण की जिसकी प्रतिध्वनि आज भी विश्व के विभिन्न भागों मे सुनी जा सकती है। मनुष्य मात्र के वैयक्तिक एवं सामूहिक कल्याण का महत्वपूर्ण कार्य ऐसे लोगों द्वारा सम्पादित किया जा सकता है जो सत्य विद्यादि गुण युक्त, उत्तम गुण वाले धर्मात्मा एवं परोकारी हों ऐसी ही लोगों को महर्षि दयानन्द ने आर्य माना है और उन्हें के संगठन को आर्य समाज की शिक्षा दी है। महर्षि का मन्तव्य था कि आर्य किसी विशेष जाति का नाम नहीं है न ही किसी देश विदेश के निवासियों की संज्ञा आर्य है।

आर्य समाज द्वारा संचालित प्रायः सभी शिक्षण संस्थाओं का वातावरण वैदिक धर्म तथा आर्य संस्कृति के अनुरूप है और उनमें यह प्रयत्न किया जाता है कि बालक और बालिकायें सदाचारमय जीवन एवं नैतिक आदशों को अपने सम्मुख रखें और वैदिक धर्म के मूल तत्वों से भी वे परिचित हो जायें ऐसी शिक्षण संस्थायें आर्य समाज द्वारा स्थापित की गयी है। स्वामी जी का प्रयत्न था कि ऐसी शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की जाय जिनमें आर्य–ग्रन्थों की पढाई की प्रमुखता हो, जिनका वातावरण वैदिक धर्म के अनुरूप हो और जिनमें गुरू अपने शिष्यों को उसी ढंग से शिक्षा दे जैसे कि मनुष्य के तीन शिक्षक–माता, पिता एवं आचार्य होते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जहां सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनः स्थापति करने का प्रयत्न किया वहीं प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के अनुसार शिक्षण–संस्थाओं को भी की। स्वामी जी मनुष्य को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करने के प्रबल पक्षपाती थी। उनके मत में किसी को भी विद्या से वंचित रखना सर्वथा अनुचित था। उनका मन्तव्य था कि ''जन्म से सब कोई शूद्र ही होते है शिक्षा और संस्कार द्वारा ही कोई व्यक्ति द्विज बनता है। आर्य समाज में उनके इस मन्तव्य का अविकाल रूप से अनुसरण किया गया और अपनी शिक्ष संस्थाओं में प्रवंश के लिए सवर्ण एवं हरिजन छूत एवं अछूत का कोई भेद नही रखा। भारतीयों को शिक्षा के सन्दर्भ में स्वामी जी ने नयी दिशा दी इसीनिए श्रीमती एनी बेसेन्ट ने महर्षि के बारे में कहा भी था ''स्वामी दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने ''हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानीयों के लिए'' का नारा लगाया था

महर्षि दयानन्द का भारतीय शिक्षा में महानतम योगदान है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नही बचा है। जिसे उन्होने स्पर्श न किया हो। उनकी शिक्षायोजना, शिक्षा का अर्थ उद्देश्य, पाठयक्रम, अनुशासन और शिक्षक तथा शिक्षार्थी के सम्बन्ध में एवं विद्यालय व्यवस्था सम्बन्धी सभी विचार मौलिक, व्यापक तथा जीवन केन्द्रित है। स्वामी जी ने शिक्षा को सामाजिक एवं राजनीतिक क्रान्ति का स्रोत मानकर शिक्षालयों और समाज के बीच घनिष्ठतम सम्बन्ध जोडने का आजीवन प्रयास किया था। इस प्रकार स्वामी जी महान शिक्षा–विचारक थे उनका स्पष्ट दर्शन–शैक्षिक जगत में दिनकर की भाँति सदा प्रकाशमान है।

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

शिक्षा दर्शन का अभिन्न अंग है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का शैक्षिक जगत निर्मल स्वच्छ एवं पावन है। स्वामी जी महान क्रान्तिकारी विचारक, शिक्षमानीषी थे। अपने विचारों के द्वारा वैदिक सामाजिक व्यवस्था का सृजन करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती का शिक्षा दर्शन उत्तम श्रेणी का है। शिक्षा में योग पर बल दिया है। विद्यार्थी के लिए जीवन तपस्वी की भँति होना चाहिए। स्वामी जी ने माता–पिता को ही बालक का प्रथम शिक्षक माना है। विद्यालय में बालकों के निवास हेतु सुविधा पर अत्याधिक बल दिया था।

संदर्भ ग्रन्थ

1. आल्तेकर ए0एस0 : एजूकेशन इन ऐशियंट इण्डिया, (दि इण्डियन बुक शाप, बनारस : 1934 एवं तृतीय संस्करण 1948)
2. आचार्य लक्ष्मी दत्त : दयानन्दीय शिक्षा पद्धति,
3. प्रसाद, रघुनाथ : श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा आर्य समाज के कायों का अभिनन्दन – 1908